मंदिर की बिल्ली

एंड्रयू क्लेमेंट्स

चित्र: केट कीस्लर

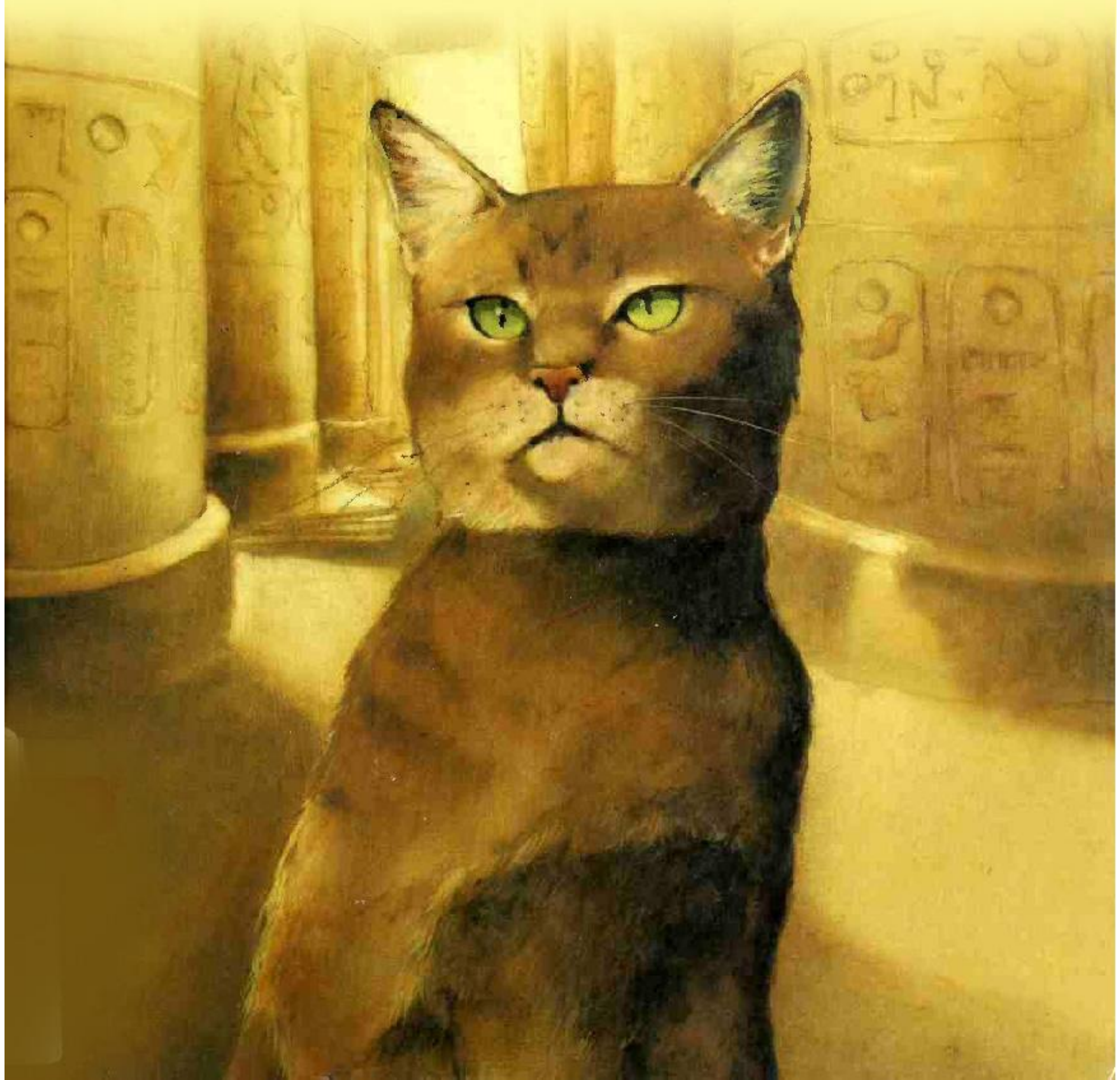

मंदिर की बिल्ली

एंड्रयू क्लेमेंट्स

चित्र: केट कीस्लर

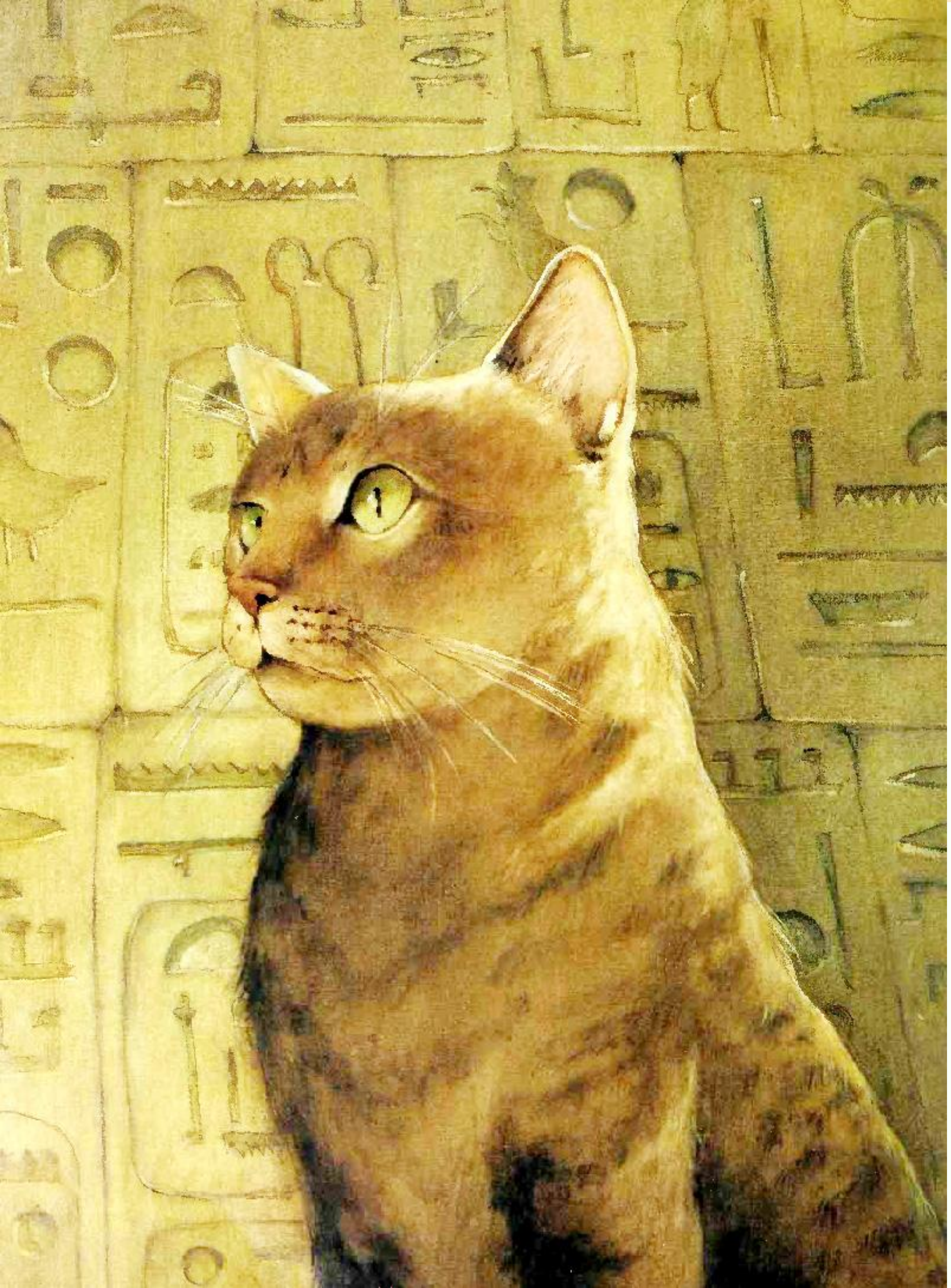

नेबा के प्राचीन शहर में एक मंदिर था,

और उस मंदिर में एक बिल्ली रहती थी.

बिल्ली सिर्फ़ वहाँ केवल रहती नहीं थी.

वो बिल्ली उस मंदिर की देवी थी.

जब से वह एक छोटी बिल्ली की बच्ची थी
उसके पास अपने नौकर थे
जो दिन-रात उसकी देखभाल
और निगरानी के अलावा
और कुछ नहीं करते थे.

वे उसे खाना खिलाते थे.
वे उसके लिए संगीत बजाते थे.
वे उसके लिए नृत्य करते थे.
वे उसके लिए एक पवित्र अग्नि जलाते थे.

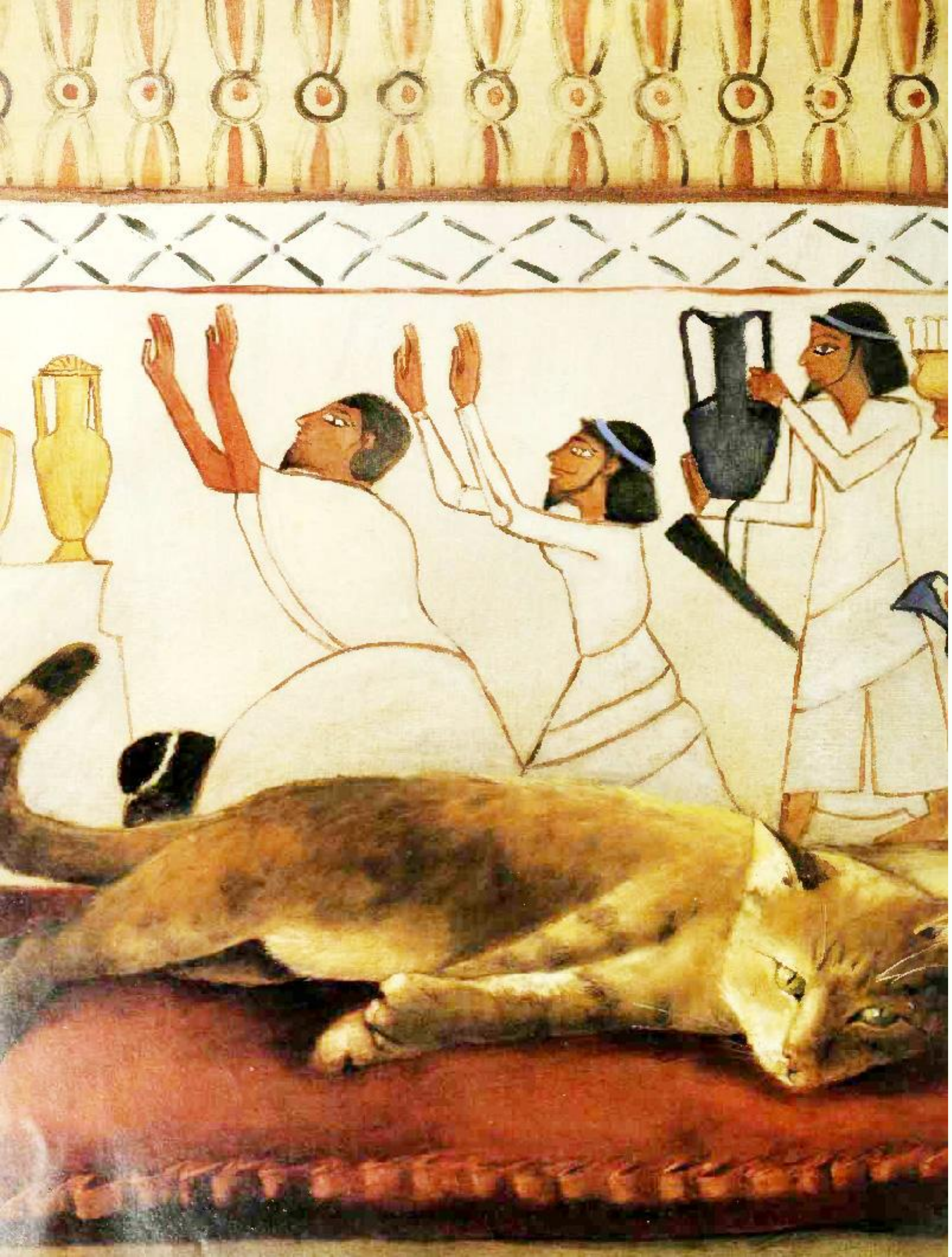

वे उसे भगवान की तरह पूजते थे.

किसी को भी याद नहीं

कि उस देश के लोगों ने

बिल्लियों की पूजा कब शुरू की थी,

बिल्ली को निश्चित रूप से इसका पता नहीं था,

और न ही उसे इस बात की परवाह थी.

वह बस इतना जानती थी

कि उस मंदिर का भगवान होना

ज़्यादा मज़ेदार नहीं था

जब वह चमकते तालाब में
मछली पकड़ने की कोशिश करती
तो कोई नौकर दौड़कर
उसके लिए मछली पकड़ता
और फिर उसे जड़ी-बूटियों
और मसालों के साथ पकाता
और उसे एक छोटे से सुनहरे कटोरे में परोसता.

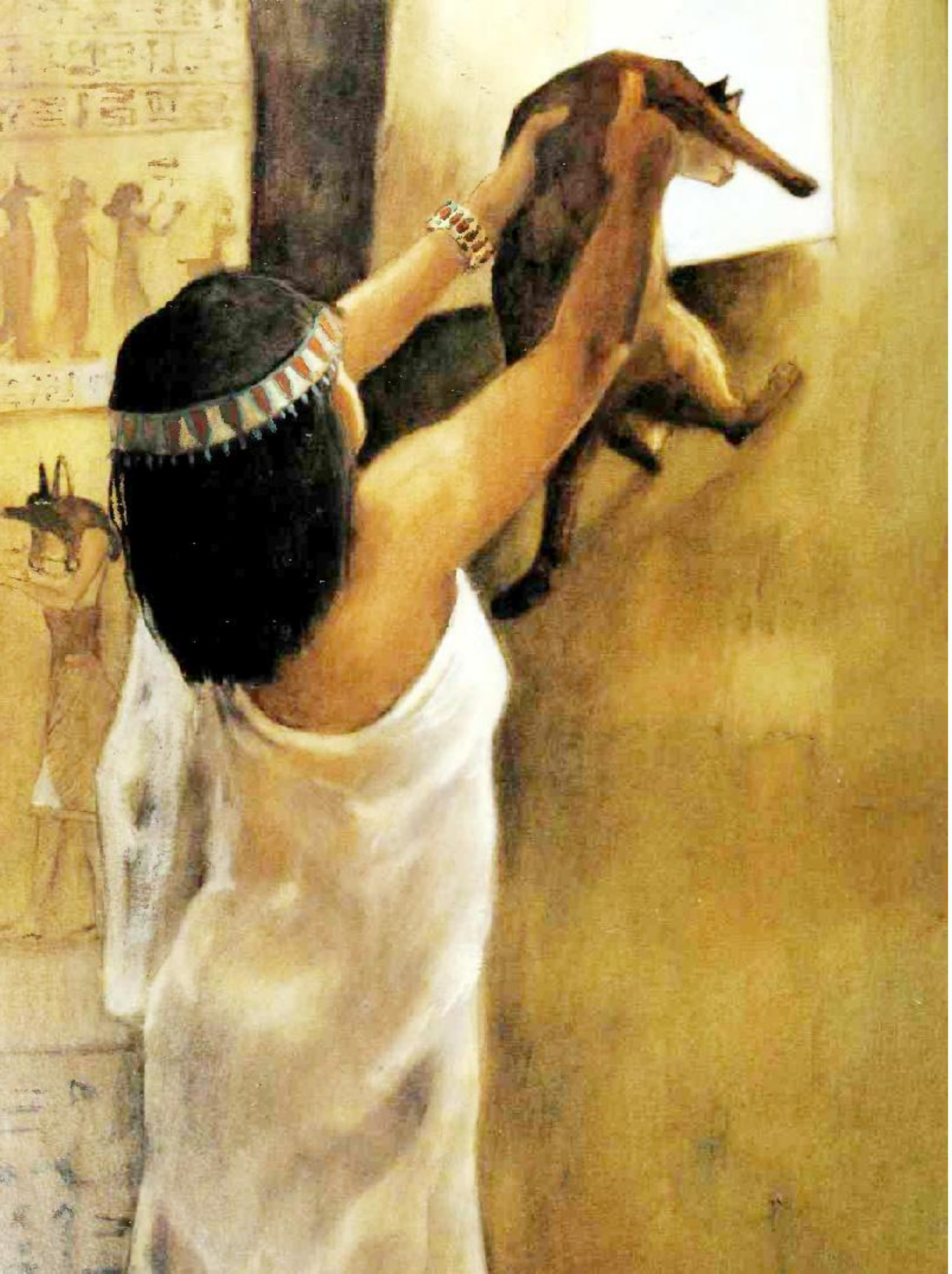

जब वह धूप में खिड़की के
ठंडे पत्थर पर लेटती,
तो एक नौकर उसे धीरे से उठाता
और उसे उसके बिस्तर के
मुलायम लाल तकिए पर
वापस लिटा देता.

जब वह रात में अकेले घूमना चाहती
और चाँदनी में उड़ने वाले पतंगों
को पकड़ना चाहती
और अपनी ही परछाई से
खुद को डराना चाहती,
तो कोई नौकर पंखा और मशाल लेकर
उसके पीछे-पीछे चलता
और सारा मज़ा किरकिरा कर देता.

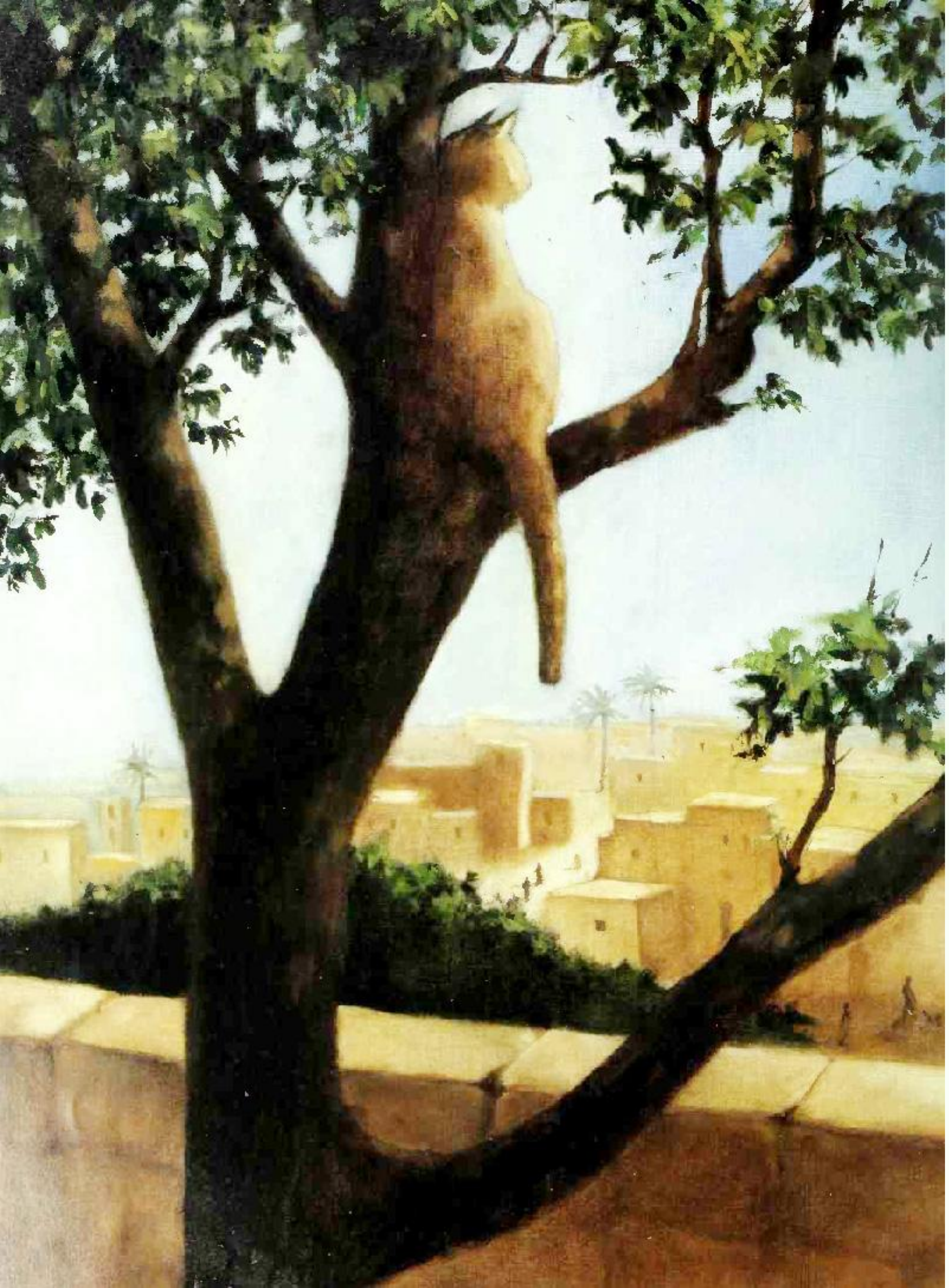

आँगन के ऊपर अपने बसेरे से,

सबसे ऊँचे नौकरों की पहुँच से परे,

वहाँ बादाम के पेड़ की सबसे ऊँची शाखा पर,

वह मंदिर की दीवारों से बहुत आगे

तक देख सकती थी.

वहां सड़कों पर बच्चे खेल रहे थे,

और वहां पर दुनिया की सभी बिल्लियाँ

आज़ाद घूम रही थीं.

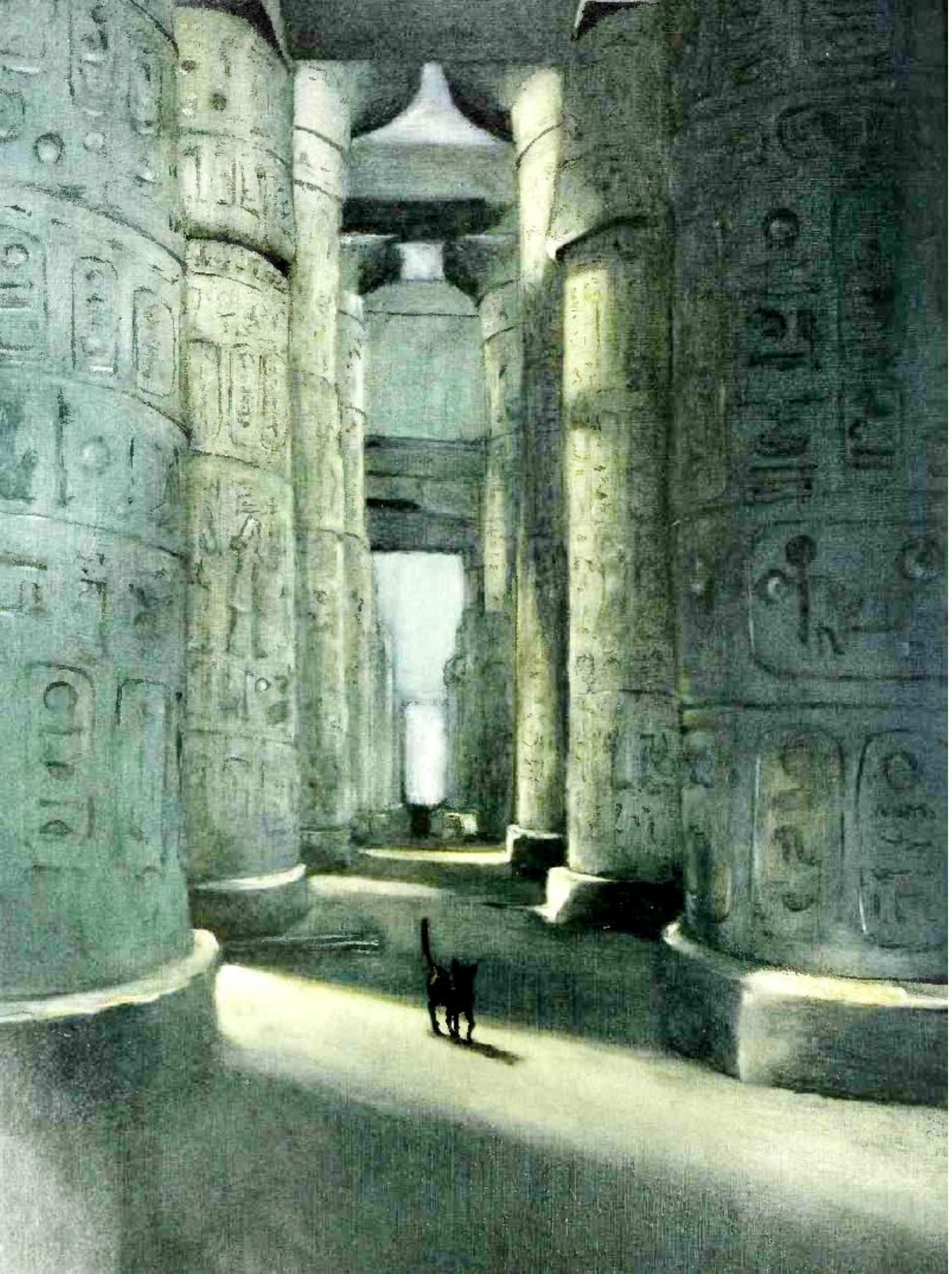

एक रात देर को, वह मंदिर से

चुपके से फिसलकर बाहर निकल गई.

पहले आंगन से, फिर एक गली से नीचे,,
बाड़ के ऊपर, एक खेत के पार, एक पहाड़ी पर,
एक चरागाह से होते हुए, एक सड़क के किनारे,
एक गाँव में से गुज़रकर
अंत में, वह सूरज के उगने के समय
एक छोटे से खलिहान में आराम करने को रुकी.
और वहां वो इतनी मस्त सोई
जितनी वो पहले कभी नहीं सोई थी.

और इस तरह से उसने तीन और रातों तक यात्रा की.

फिर वह समुद्र के किनारे पहुँच गई.

वहां ठंड थी, और वह एक छोटी सी झोपड़ी की ओर गई,

जहाँ रेत पर आग जल रही थी.

वह सावधानी से आग की रोशनी के घेरे में गई

और म्याऊँ करने लगी.

यात्रा करने और खाए बिना रातें बिताने की वजह से

बिल्ली एकदम दुबली-पतली और थोड़ी जंगली दिख रही थी.

कोई भी, यहाँ तक कि मंदिर के उसके नौकर भी

अब नहीं सोचते, कि वह भगवान थी.

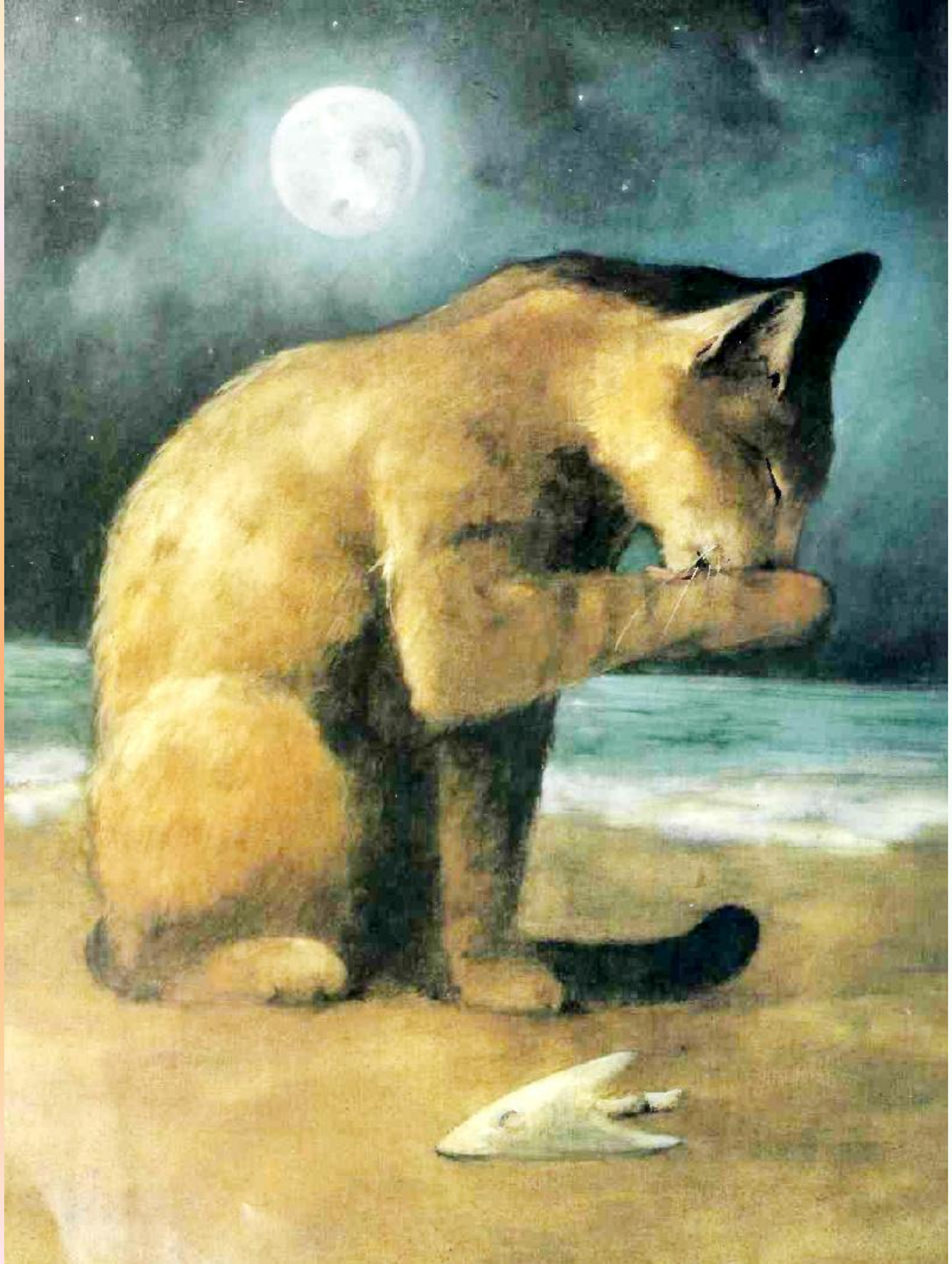

वहां खुरदरे स्टूल पर बैठे आदमी ने
उसके लिए मछली का एक सिर फेंका.
अपने जीवन में पहली बार,
छोटी बिल्ली ने असली बिल्ली का खाना खाया.
उतना स्वादिष्ट भोजन
बिल्ली ने पहले कभी नहीं चखा था.

और बाद में जब बिल्ली मछुआरे के पैर से रगड़ी,

तो आदमी ने उसके कानों के पीछे खुजलाया.

बिल्ली को पहले किसी चीज में

इतना मज़ा कभी नहीं आया था.

अगली सुबह शोर मचाते मछुआरे के बच्चे
चमचमाती धूप में नाचते हुए बाहर आए,
और फिर वे वहीं रुक गए.

और फिर, इससे पहले कि बिल्ली को पता चलता कि

उसकी सबसे प्यारी इच्छा क्या थी,

वह पूरी हो गई थी.

वह बच्चों के साथ खेली,

और बच्चों ने उसे खूब प्यार किया.